अंडमानी हिन्दी (हिंदुस्तानी) की दशा एवं दिशा

जोसफ़ दास
सह-आचार्य,
टैगोर राजकीय शिक्षा महाविद्यालय, मिडिल प्वाइंट पोर्ट ब्लेयर
पॉण्डिचेरी विश्वविद्यालय, कालापेट, पुडुचेरी

सारांश:

अंडमानी हिन्दी यानिकी हिंदुस्तानी जिसे खिचड़ी भाषा भी कही जाती है पूरे अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में बोली जाने वाली एकमात्र ऐसी बोली है जो द्वीपों में रह रहे प्रत्येक भाषा भाषी के लोग बोलते है यानिकी चाहे उनकी मातृभाषा बांग्ला हो या तमिल, चाहे वे सादरी बोलते हो या पंजाबी, सभी इस बोली के माध्यम से ही अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करते हैं। अंडमानी हिन्दी की दशा की ओर ध्यान दें तो हम पाते इसका भविष्य बहुत उज्ज्वल है क्योंकि यह लाखों आबादी वाले केन्द्रशाषित प्रदेश में बोली जाती है। यहाँ लोग इस बोली के माध्यम से अचार-विचार का आदान प्रदान करते हैं। सन् 1857 से लेकर 2023 तक इस बोली में काफ़ी बदलाव देखने को मिले है यह बोली अपनी बोलचाल की विभिन्न आयामों से होकर गुज़री है और इसमें आये यह बदलाव हमेशा से अंडमानियों को इस बात का एहसास दिलाती है कि इस बोली ने स्वतंत्रता के दिनों से लेकर अबतक लोगों को भाईचारे एवं एकता का संदेश दिया है। हालाँकि इस बोली का निर्माण कालापानी की सज़ा सुनाकर लाये क़ैदियों ने आपस में बोलचाल के लिए किया था ,परन्तु आज यह पूरे द्वीपों की बोली है। ये वही क़ैदी थे जिन्होंने 1857 के भारतीय विद्रोह में भाग लिया था और देशभक्ति की सज़ा के चलते अंडमान लाये गये थे।इस बोली की दिशा बहुत ही उज्जवल है अर्थात् इस बोली को संजोकर रखना प्रत्येक अंडमानी का कर्तव्य है।

बीज शब्द : *कालपानी, सादरी , लिप्त, अपवाद, जादा, भालो, शूँदोर, बूढ़ा भिंडी, उनी , दारुण , भैंकर, मरम, गैरा, जक्खम, आगी,कमान, आँखी, नीमक, जैंगा, बत्तीतेल, नाली, झाल, गाई, भैंसी, अस्ते-अस्ते, सर्प, नदारद, अतवार, बरेंडा*

१. अंडमानी हिन्दी (हिंदुस्तानी) की दशा

आज अंडमानी हिन्दी (हिंदुस्तानी) पूरे अंडमान निकोबार द्वीप समूह में बड़े ही गर्व के साथ बोली जाती है और अंडमानी हिन्दी बोलकर एक अंडमानी अपने आप को गौरवान्वित महसूस करता है। अंडमानी हिन्दी की अगर दशा की बात की जाये तो यह 1857 से लेकर आज भी बिल्कुल वैसा ही है,हालाँकि अंडमानियों ने कुछ नये शब्दों का इज़ात तो किया है जो परस्पर जनता द्वारा बोली व समझी भी जाती है, अगर इन शब्दों को का

प्रयोग मुख्यभूमि में की जाये तो शायद ही वहाँ के लोग समझे। अंडमानी हिन्दी आज अंडमान के प्रत्येक ज़िला क्षेत्र में बोली जाती है, यद्यपि अंडमानी हिन्दी में मातृभाषा के प्रभाव के कारण इसके उच्चारण में शुक्ष्म बदलाव देखें जा सकते हैं।एक बांग्ला भाषी अंडमानी हिन्दी अपने मातृभाषा को सम्मिलित कर अपने एक अलग लहजे से बोलता है तो वहीं एक तमिलभाषी अपने लहज़े से,इस प्रकार इसमें परस्पर भिन्नता देखी जा सकती है। अंडमानी हिन्दी की दशा को निम्नलिखित तथ्यों से समझा जा सकता है :

२. व्याकरण की अनुपस्थिति

अंडमानी हिन्दी में व्याकरण शून्य मात्र है। अर्थात् इसमें व्याकरण का प्रयोग न के बराबर होता है। व्याकरण के पहलुओं से परे होने पर भी यह भाषा एकदूसरे को जोड़ने का कार्य करती है। जहां हिन्दी भाषा व्याकरण से लिप्त होती है तथा ,संपर्क भाषा होने के साथ साथ साहित्य,व्यापार एवं वाणिज्य,राजकाज,वैज्ञानिक अनुसंधान की भाषा है वहीं अंडमानी हिन्दी (हिंदुस्तानी) बोली बिना व्याकरण के भी अंडमान के प्रत्येक कार्यप्रयोग में लायी जाती है।चाहे वह व्यापार व वाणिज्य हो,संपर्क भाषा के रूप में हो, या दफ़्तरों,स्कूलों या कॉलेजों की भाषा हो। सभी अंडमानी हिन्दी पर ही निर्भित हैं। जब मुख्यभूमि से लोग अंडमान आते हैं (ख़ासकर सेना के जवान तथा उनके परिवार) तो वे भी कुछ ही महीनों में अंडमानी हिन्दी बोलने लगते है।उन्हें भी यह बोली भा जाती है, कारण इसकी सरलता। यह बोली स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा प्रयोग में लायी हिन्दी की बिगड़ी रूप थी अतः अंडमानी जब अंडमानी हिन्दी बोलते हैं तो वे बड़े ही गर्व के साथ इस भाषा के प्रयोग कर अन्य लोगों को भी प्रेरित करते हैं। अंडमानी हिन्दी में व्याकरण न होने के बावजूद भी यह जनता के मध्य एक लोकप्रिय भाषा बन कर अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है। अंडमानी हिन्दी में निम्नलिखित व्याकरणिक तथ्यों की अनुपस्थिति देखी जा सकती है :

क) एक ही लिंग (Gender) का प्रयोग

हिन्दी में सामान्यता 2 लिंग है : **स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग,** उसी प्रकार संस्कृत में तीन लिंग है : **स्त्रीलिंग ,पुल्लिंग एवं नपुंसक लिंग**,अंग्रेज़ी में 4 लिंग है : **Feminine,Masculine,neuter तथा common gender.**पर अंडमानी हिन्दी (हिंदुस्तानी) में सिर्फ़ 1 ही लिंग है : " **पुल्लिंग** ", अर्थात् यहाँ महिला के लिए भी पुल्लिंग का ही प्रयोग किया जाता है।यहाँ महिला एवं पुरुष के लिए लिंग की कोई अलग व्यवस्था नहीं है। उदाहरण के लिए :

तालिका 2.1 : अंडमानी हिन्दी (हिंदुस्तानी) में लिंग

महिला (पुल्लिंग)	पुरुष (पुल्लिंग)
तुम खाना खाया ?(नेहा खाना खा लिया)	हाँ हम खाया। तुम खाया?(विनोद खाना खा लिया)
कहाँ जाता है ?(नेहा तुम काँ जाता)	हम भी जाएगा।(विनोद भी जाएगा)

हिन्दी में वस्तुओं के लिए भी लिंग निर्धारित की गई है , जबकि अंडमानी हिन्दी में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है, यहाँ सभी मानवीय भावों (human emotions), निर्जीव वस्तु तथा स्थान के लिए 1 ही लिंग : पुल्लिंग को इस्तेमाल में लाया जाता है ।

तालिका 2.2 : हिन्दी में निम्नलिखित वर्ग के नाम प्रायः पुल्लिंग होते हैं

अंग	बाल, मुँह, कान, सिर, हाथ, पैर (आँख, नाक स्त्रीलिंग)
महीने	आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, कार्तिक, मार्गशीष, पौष, वैशाख, ज्येष्ठ आदि (अंग्रेज़ी महीनों में जनवरी, फरवरी, मई, जुलाई अपवाद हैं)
धातु	सोना, ताँबा, लोहा, पीतल (चाँदी स्त्रीलिंग)
अनाज	चावल, बाजरा, गेहूँ, मूंग (अरहर, ज्वार स्त्रीलिंग)
समुद्र	प्रशांत महासागर, हिंद महासागर, अरब सागर, लाल सागर, भूमध्य सागर, अंध महासागर आदि।
पर्वत	कैलाश, विंध्याचल, अरावली, सतपुड़ा, हिमालय।
स्थान	वाचनालय, विद्यालय, पुस्तकालय, न्यायालय, चिकित्सालय, मंत्रालय, शयनगृह आदि।
द्रव्य	घी, पानी, डीज़ल, तेल आदि। रत्न – नीलम, पुखराज, हीरा, मोती, मूंगा, पन्ना।
वार	सोमवार, मंगलवार, बुधवार, वीरवार, शुक्रवार, शनिवार तथा रविवार।
ग्रह	शनि, चंद्र, ध्रुव, बृहस्पति, रवि, मंगल, सूर्य

तालिका 2.3 : हिन्दी में निम्नलिखित वर्ग के नाम प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं

लिपि	देवनागरी, गुरुमुखी, रोमन।
भाषा	हिंदी, संस्कृत, मराठी, बंगला, तमिल, जर्मन, मलयालम, फारसी, गुजराती
तिथि	प्रथम, द्वितिया, तृतीया, चतुर्थी, एकादशी, त्रयोदशी, पूर्णिमा, प्रतिपदा, अमावस्या
प्राणी	मैना, मछली, चील, छिपकली, गिलहरी, कोयल आदि। इनके साथ आगे नर जोड़ने पर ये पुल्लिंग बनती हैं
भोजन	जलेबी, पूरी, सब्ज़ी, रोटी।
अंग	आँख, नाक, ठोड़ी, छाती, जीभ, पसली, एड़ी, पिंडली, पलक, कमर, जीभ

हिन्दी भाषा में स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग का अलग अलग प्रयोग देखने को मिलता है, हालाँकि अंडमानी हिन्दी (हिंदुस्तानी) में ऐसी व्यवस्था नहीं है । यहाँ स्त्रीलिंग का प्रयोग न के बराबर किया जाता है ,यहाँ पुल्लिंग का ही सबसे ज़्यादा प्रयोग होता है। हालाँकि व्याकरण की दृष्टि से देखा जाये तो यह ग़लत है ,परंतु इसमें फिर वह अपवाद आ जाती है कि अंडमानी हिन्दी(हिंदुस्तानी) **भाषा** न होकर एक **बोली** है जो हिन्दी से बिलकुल अलग है।अतः इसमें थोड़े बहुत बदलाव आना लाज़मी है ।

ख) वचन (Numbers)

व्याकरण में **वचन** का एक अभिन्न स्थान होता है,अर्थात् बिना वचन के हम यह सुनिश्चित नहीं कर सकते की लोगों की संख्या क्या थी? क्या वो एक थे या एक से अधिक। जहां हिन्दी में एक व्यक्ति के लिए एकवचन(Singular) तथा एक से अधिक के लिए बहुवचन(Plural) का प्रावधान है वहीं अंडमानी हिन्दी(हिंदुस्तानी) में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है। यहाँ एकवचन के लिए भी बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। अंडमानी हिन्दी में हिन्दी का एक शब्द "मैं" पूरी तरह से लुप्त है ,यानिकी "मैं"(एकवचन) की जगह में "हम"(बहुवचन) बोलने की व्यवस्था है ।परंतु अंडमानी हिन्दी में "मैंने"(एकवचन) शब्द के लिये हमने(बहुवचन) का प्रचलन नहीं है,बजाये हमने के स्थान पर "हम" ही बोला जाता है। ठीक उसी प्रकार " मेरा"(एकवचन) के लिए भी "हमारा" (बहुवचन) की व्यवस्था नहीं है, अर्थात् यह मूलतः वैसे ही बोला जाता है जैसे की हिन्दी में।

तालिका 2.4 : हिन्दी तथा अंडमानी हिन्दी में वचन का प्रयोग :

हिन्दी	**अंडमानी हिन्दी(हिंदुस्तानी)**
मुझे आज बहुत तेज़ बुख़ार है ।	हमको आज बहुत जादा(ज़्यादा) बुख़ार है ।
मैं तुमसे कल मिलूँगा ।	हम तुमसे कल मिलेगा

तालिका 2.5 : हिन्दी तथा अंडमानी हिन्दी में वचन का स्थान (जो प्रयोग के अनुसार बदलता नहीं)

हिन्दी	**अंडमानी हिन्दी**
यह मेरा दोस्त है	ये मेरा(यहाँ एकवचन की ही व्यवस्था है अर्थात् **हमारा** नहीं) दोस्त है ।
मैंने खाना खा लिया है ।	•हम(हमने तथा मैंने की व्यवस्था नहीं है) खाना खा लिया (भूतकाल) •हमको खाना खाना है ।(भविष्यकाल)
यह मेरी किताब है ।	ये मेरा(वचन में कोई परिवर्तन नहीं पर लिंग में परिवर्तन) किताब है ।(किताब के स्त्रीलिंग होने पर भी पुल्लिंग का प्रयोग ।)

ग) विशेषण (Adjective)

संज्ञा की विशेषता बतलाने वाला विकारी शब्द विशेषण कहलाता है , उदाहरण के लिए **सुंदर** बच्चे, यहाँ बच्चे (संज्ञा) की विशेषता बताने लिए **सुंदर** शब्द का प्रयोग किया गया है । हालाँकि अंडमानी हिन्दी में ऐसी कोई ठोस व्यवस्था नहीं है ,वरन् यहाँ **सुंदर** के लिए **सही** शब्द का प्रयोग किया जाता है । जबकि "**सही**" "**सुंदर**" का समानार्थी शब्द नहीं है । हम किसी को देखकर यह नहीं कह सकते की **तुम सही दिख रहे हो** , अंडमानी हिन्दी में **सही दिख रहे हो का मतलब है आप सुंदर दिख रहे हो** । उसी प्रकार अंडमानी हिन्दी में सुंदरता की बख़ान करने के लिए भयंकर(भैंकर) शब्द का भी प्रयोग किया जाता है ।

उदाहरणतः राहुल भयंकर (भैंकर) दिखता है । (भयंकर का अर्थ है डरावना) और इसके पर्यायवाची देखी जाये तो हम पाते हैं :दारुण(कड़ा,कठोर,निर्दयी) साहित्य में भी दारुण को भयानक रस कहा गया है वहीं अंडमानी हिन्दी में इसका प्रयोग सुंदर के रूप में प्रयुक्त हुआ है । वहीं बांग्ला में भी दारुण का मतलब अच्छा या सुंदर से है ।(**उदाहरण :उनी दारुण दैखते।**)(भालों या शूँदोर) **भयंकर** शब्द का अर्थ **दारुण** को अंडमानी हिन्दी में हू -ब-हू ले लिया गया है। अंडमानी हिन्दी में किसी भी सब्ज़ी की विशेषता बताने के लिए बूढ़ा या बच्चा का प्रयोग किया जाता है । जैसे **बच्चा** लौकी ,**बूढ़ा** भिंडी अर्थात् **बच्चा** लौकी का मतलब है **नर्म** लौकी तथा **बूढ़ा** का अर्थ **सख़्त** से है ।

तालिका 2.6 : विशेषण का हिन्दी तथा अंडमानी हिन्दी में प्रयोग :

हिन्दी	**अंडमानी हिन्दी**
गीता **सुंदर** दिखती है	गीता **सही** दिखती है
अमित **सुंदर** दिखता है	अमित **भैंकर** दिखता है (अंडमानी हिन्दी में **भयंकर** को **भैंकर** कहा जाता है)
नर्म लौकी	बच्चा लौकी
सख़्त भिंडी	बूढ़ा भिंडी

घ) संज्ञा (Noun)

अंडमानी हिन्दी का इतिहास बहुत पुराना है और समय के साथ साथ यहाँ कई भाषायिक परिवर्तन होते रहे हैं,इन्हीं परिवर्तनों के कारण ऐसे नये नये शब्दों का इज़ात हुआ जिससे कभी दो शब्दों को जोड़कर नये शब्द बनाने की परंपरा रही तो कभी मूल शब्दों का उससे विपरीत अर्थ में प्रयोग करने की ।अंडमान वासी इन शब्दों का सालों से प्रयोग करते आ रहे हैं । ये शब्द अगर तोड़ तोड़ कर बोला जाये तो बिलकुल अलग अर्थ प्रदान करते है । उदाहरणतः

तालिका 2.7 : संज्ञा के मूल शब्द तथा अंडमानी हिन्दी के मूल शब्द

संज्ञा शब्द	अंडमानी शब्द तथा प्रयोग
मिट्टी का तेल	बत्तीतेल
औरत	पत्नी(अंडमानी हिन्दी में अपनी पत्नी को संबोधित करने के लिए औरत शब्द का प्रयोग किया जाता है)
मिर्च मासले से बना ज़ायक़ेदार पानी	खट्टा पानी
काली मिर्च	गोल मिर्ची
जाँघिया	जैंगा (जाँग तक पहने जाने वाले पैंट)
काम	कमान
आँख	आँखी
आग	आगी
नमक	नीमक
मरहम	मरम
दर्द	दरद
गहरा	गैरा
ज़ख़्म	जक्खम
दाग	दागी
मिर्च पड़ना	झाल
नाला	नाली

ड) "ई" प्रत्यय (Suffix) का प्रयोग :

अंडमानी हिन्दी (हिंदुस्तानी) की एक विशेषता यह है कि इसमें ऐसे अनेकोनेक शब्द है जिसके अंत में "ई" प्रत्यय लगाने का चलन है ,अतः ये ऐसे शब्द है जो सिर्फ़ अंडमान निकोबार द्वीप समूह में ही प्रयोग में लाये जाते है। अंडमान के बाहर ऐसे शब्दों की पहचान शून्य है। उदाहरणतः

तालिका 2.8: "ई" प्रत्यय का प्रयोग :

मूल शब्द	"ई" प्रत्यय के साथ प्रयोग
गाय	गाई
भैंस	भैंसी
आग	आगी
आँख	आँखी
नाला	नाली

1)"रे" का अलग-अलग संदर्भों में प्रयोग :

भारतीय राज्य जैसे बिहार एवं उत्तरप्रदेश आदि में "रे" का प्रयोग हीनभाव को प्रदर्शित करता है अर्थात् वहाँ "रे" प्रयोग किसी को भी संबोधित करने के लिए नहीं किया जाता ,वहीं अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह में "रे" का प्रयोग माधुर्य भाव को दर्शाता है।"रे" प्रेम तथा वास्ताल्य भाव से परिपूर्ण होता है। अर्थात् यहाँ जब एक माँ अपने बच्चे को रे कह कर संबोधित करती है ,इसका मतलब है वह अपने बच्चे के प्रति प्रेम भाव प्रदर्शित कर रही हैं। वहीं कभी कभी अंडमानी हिन्दी में "रे" चेतावनी वाचक भी होता है।अर्थात् किसी को भी सचेत करने या चेतावनी देने के लिए "रे" का प्रयोग किया जाता है।

तालिका 2.9: "रे" का अंडमानी हिन्दी में प्रयोग

माधुर्य भाव	●कहाँ जाता रे ? ●क्या रे बच्चा ●अ रे रे शोना बच्चा
चेतावनी वाचक	●उधर मत जाओ रे ●बात मत करो रे ●यहाँ मत बैठो रे

2)उर्दू भाषा का प्रभाव :

अंडमानी हिन्दी के व्युत्पति में उर्दू भाषा का भी प्रभाव देखा जा सकता है, जब क़ैदियों को अंडमान में देशभक्ति की सज़ा सुनाकर लाया गया तब वे अपने साथ उर्दू भाषा भी लाये, उस समय युनाइटेड प्रोविंस (उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखंड के कुछ भाग) में उर्दू का चलन बहुत ज़्यादा था इसलिए वहाँ से लाये गये क़ैदी अपने साथ उर्दू भाषा भी लाये हालाँकि अंडमान में उर्दू को उर्दू की तरह नहीं बोला जाता बजाये इसके शब्दों को अंडमानी हिन्दी(हिंदुस्तानी) के वाक्य में प्रयुक्त कर बोलने का चलन रहा है इसलिए सामान्यतः लोग

बातचित में उर्दू बोल जाते है और उन्हें ज्ञात भी नहीं होता । उदाहरण के लिए : तुमको **मालूम** है हम उससे **ज़्यादा** बात करेगा तो वो **अस्ते अस्ते (आहिस्ता-आहिस्ता)** मेरा **तरफ़** आएगा ।ऐसे अनगिनत अंडमानी हिन्दी के वाक्य है जिसमें कहीं न कहीं उर्दू का प्रयोग होता है , अतः इससे यह तथ्य सामने आता है की अंडमानी हिन्दी उर्दू भाषा के शब्दों को भी साथ लेकर चलती है ।

3)स्थानों के नाम :

अंडमानी हिन्दी में अंडमान निकोबार द्वीप समूह में स्थित जगहों के नाम भी अलग अलग तरह से बोले जाते हैं, ब्रिटिश काल में इन्ही जगहों के नाम कुछ और रखे गये थे जो अंडमानी जनता द्वारा अंग्रेज़ी की अज्ञानता के कारण बदल कर कुछ और बोलने का चलन बन गया ,उदाहरण के लिए : पोटमोट को कोट मोट, मिनी बे : मिनी बेग,बन्नी बे,आनिकेट: रानीखेत,एलीफैंट प्वाइंट : हाती टापू, डड्संपॉइंट : चूना भट्टा ,साउथ पॉइंट : नीमक भट्टा इत्यादि ।

4)संख्याओं की गिनती (Counting of Numbers) :

•**1-30 की गिनती :** अंडमानी हिन्दी में संख्याओं की गिनती कुछ अलग ढंग से करी जाती है , यहाँ 1 से 30 तक की गिनती हिन्दी में की जाती है और 31 से गिनती अंग्रेज़ी में की जाती है । अर्थात् 31(एक्कतीस) न बोलकर थर्टी वन (thirty one) से गिनती गिनने की चलन है ।

•**बड़े संख्याओं को बोलने की विधि :** अंडमानी हिन्दी में बड़े संख्याओं की गिनती सामान्य विधिवध तरीक़ों से नहीं करी जाती बजाये प्रत्येक संख्याओं का स्वतंत्र उच्चारण किया जाता है । उदाहरण के लिये : 31 रुपए 71 पैसे (तीस एक रुपए सत्तर एक पैसा) , 255 रुपए को दो सौ पचपन न कहकर दो सौ पचास पाँच कहा जाता है ।

•**पहाड़ा (Table) :** अंडमानी हिन्दी में पहाड़ा बोलने में भी भिन्नता देखी जा सकती है । सामान्यतः Two ones are two, two twos are four होता है पर अंडमानी हिन्दी में टू वन **जा** टू ,टू टू **जा** फोर बोला जाता है । जिसमें **"जा"** का कोई अर्थ नहीं होता है अपितु उसे **are** के जगह में पूरक शब्द के तौर पर प्रयोग किया जाता है ।

5)अर्थ-विस्तार और अर्थ-संकोच :

अंडमानी हिन्दी में काफ़ी शब्दों का अर्थ संकोच एवं अर्थ विस्तार हुआ है ।जब किसी शब्द का अर्थ संकोच होता है तब वह शब्द कोई एक विस्तृत अर्थ प्रदान करता है, उदाहरणतः **सर्प** : पहले **सर्प** शब्द का प्रयोग कोई भी रेंगने वाले जीव के लिए किया जाता था परन्तु आज सर्प का प्रयोग सिर्फ़ **साँप** के लिए किया जाता है, अंडमानी हिन्दी में ही ऐसे बहुत सारे शब्द है जिनका अर्थ संकोच हुआ है जैसे की "खाना" हिन्दी में खाना शब्द का प्रयोग कोई भी खाद्य पदार्थ जैसे की चावल,सब्ज़ी,रोटी,साग,दाल इत्यादि के लिए किया जाता है परंतु अंडमानी हिन्दी में **खाना** का अर्थ है : **चावल** अर्थात् यहाँ अगर कोई कहता है की मुझे खाना दो मतलब वो **चावल** माँग रहा है। उसी प्रकार अंडमानी हिन्दी में **चारा** शब्द का अर्थ विस्तार हुआ है: सामान्यता चारा शब्द का अर्थ होता है जानवरों को दिये जाने वाला खाना , पर अंडमानी हिन्दी में इसे **पौध(Sapling)**(जो की

रोपी जाती है)में तथा मछली पकड़ने के लिए जो छोटे केंचुए रस्सी के साथ बांधकर पानी में डाली जाती है उसके लिए किया जाता है।

6)साहित्य तथा लिखित रूप की अनुपलब्धता :

अंडमानी हिन्दी का इतिहास बहुत पुराना है ,समय समय पर इसमें विविध बदलाव भी आते रहे,लोगों द्वारा यह संप्रेषण का लोकप्रिय माध्यम भी रहा किंतु इस हिंदी में कभी भी कोई लेख,कहानी,उपन्यास या कविता नहीं लिखी गई। आज 166 सालों के बाद भी अंडमानी हिन्दी लिखने का माध्यम नहीं बन पायी। हालाँकि इस हिंदी(हिंदुस्तानी) के विषय में लिखा गया पर इस हिंदी में नहीं लिखा गया। अंडमानी हिन्दी के शब्द संग्रह को अंग्रेज **इण्डियन एंटीक्व्यरी** में प्रकाशित कराते थे साथ ही इस हिन्दी के विषय में एक अप्रकाशित शोधपत्र भी लिखी गई। परंतु इस दिशा में इतनी अधिक कार्य नहीं हुई ,तभी पूरे भारत वर्ष की जनता इस बोली से अनभिज्ञ है,केवल अंडमान वासी ही इसका प्रयोग केवल संपर्क साधने के लिए करते है। अंडमान निकोबार द्वीप समूह में हिन्दी लेखकों की संख्या संतोषजनक है परंतु उन्होंने भी इस बोली में नहीं लिखा अपितु सिर्फ़ बोली के विषय में लिखा है। अंडमानी हिन्दी हमेशा से प्रेम,भाईचारे,स्वतंत्रता,एकता एवं संघर्ष की भाषा रही है ,स्वंतंत्रता सेनानी जो अंडमान लाये गये उन्होंने अपने खून से इस भाषा को सींचा है अर्थात् इसमें लेखों की अनुपलब्धता बड़े ही दुख की बात है।

7)सिर्फ़ बोलचाल तक सीमित भाषा :

अंडमानी हिन्दी सिर्फ़ बोलचाल तक सीमित है इस बोली का विस्तार तो हुआ परंतु सिर्फ़ बोलचाल के लिए अतः इसमें कभी लिखी नहीं गई। अंडमानी हिन्दी की पहचान अंडमान से बाहर शून्य है ,अर्थात् कोई व्यक्ति अंडमान से बाहर जाकर इस बोली का प्रयोग करे तो यह संभावना है कि लोग इस बोली को समझने में असमर्थ हो। अंडमानी हिन्दी हमेशा से अपनी सरलता के कारण जनता के मध्य लोकप्रिय भाषा के रूप में विराजमान रही है अतः इस बोली में कोई भी लेख का न लिखे जाना थोड़ी सी निराशाजनक प्रतीत होती है।

३. हिन्दी की बोली के रूप में कोई लिखित मान्यता नहीं

अंडमानी हिन्दी सन् 1857 के बाद से पहले स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा और फिर बाद में अण्डमानियों द्वारा बोली जाती रही है और आज भी इस बोली का पूरे द्वीप समूह में बोलबाला है, अंडमान निवासी चाहे वह तमिल भाषी हो या बांग्ला भाषी, सादरी बोलता हो या पंजाबी, अंततः एक दूसरे से संपर्क साधने के लिए अंडमानी हिन्दी(हिंदुस्तानी) का ही प्रयोग करता है। लगभग 166 वर्षों बाद भी अंडमानी हिन्दी को हिन्दी की एक बोली के रूप में कोई लिखित मान्यता नहीं मिली है। न ही बोलियों में इसकी गिनती की जाती है,यह बड़े ही दुर्भाग्य की बात है कि जिस बोली को बोलते हुए स्वतंत्रता सेनानी ख़ुशी ख़ुशी फाँसी के फंदे पे चड़ गये ,अपने प्राणों की आहुति दी, रक्त बहा देश को सींचा उसे कोई लिखित मान्यता नहीं दी गई, यह बोली हिन्दी की उस बोली में से है जिसका भारतीय इतिहास में बहुत ही महत्व है, तथा इसका उल्लेख किसी भी दस्तावेज़ों एवं किताबों में नदारद होना बहुत ही दुख का विषय है।

8)संविधान में कोई उल्लेख नहीं :

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को राजकाज के लिए राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई है , वहीं हिन्दी की बोलियाँ जैसे अवधी ,बघेली,छत्तीसगढ़ी,भोजपुरी,मगही,मैथिली, खड़ीबोली,हरियाणवी,दक्खिनी,कन्नौजी,मारवाड़ी,मालवी,जयपुरी,मेवाती,कुमाऊँनी तथा गढ़वाली के विषय में समय समय पर लिखकर जनता के मध्य लाया जाता रहा है, इनका उल्लेख आपको विभिन्न पठन-पाठन सामग्री में मिल जाती है साथ ही इसकी उपयोगिता विभिन्न शिक्षा एवं शिक्षण संस्थान में भी देखे जा सकते है। एक अंडमानी इन सभी बोलियों से भलीभाँति परिचित है,हालाँकि वह इन बोलियों को व्यवहार में तो नहीं लाता पर इनके विषय में पढ़ता ज़रूर है, हिन्दी में स्नातक एवं स्नातकोत्तर कर रहें विद्यार्थी भी इन बोलियों का ज्ञान रखते हैं, जबकि अंडमानी हिन्दी(हिंदुस्तानी) के विषय में देश के विभिन्न प्रांतों में रह रहे लोगों से पूछी जाये तो निराशा ही हाथ लगती है,क्योंकि वे इस बोली से संयोग मात्र ही रखते हैं,जिसका सबसे बड़ा कारण संविधान में इसका उल्लेख न होने से है। राजभाषा अधिनियम 1976 के क्षेत्रीय वर्गीकरण के अनुसार अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह “क” क्षेत्र में आती है जिसका अर्थ यह है कि यहाँ की बोली ही हिन्दी है, परंतु कौनसी हिन्दी? इसका उल्लेख नहीं किया गया है, यह है अंडमानी हिन्दी(हिंदुस्तानी)। जब द्वीप समूह को हिन्दी बोलने की दृष्टि से “क” क्षेत्र में रखा गया है तो इस बोली का उल्लेख भी की जानी चाहिये ताकि देश के अन्य राज्य के लोग भी इस बोली से परिचित हो पायें ।

9)अंडमानी हिन्दी को लिखने का माध्यम बनाने की हीनता :

अंडमानी हिन्दी (हिंदुस्तानी) तथा हिन्दी दो अलग-अलग विशेषाओं से परिपूर्ण है अर्थात् इन दोनों में कुछ सूक्ष्म बदलाव देखे जा सकते हैं। अंडमानी हिन्दी में लोग लिखने से कतराते है, कारण यह शुद्ध भाषा नहीं मानी जाती, इसमें व्याकरण न के बराबर है, साथ ही लोग इस बोली में लिखने के बजाये हिन्दी में लिखना पसंद करते है। अगर यह हीनभावना ख़त्म हो जाये तो शायद लोग इस बोली में लिखने भी लगे,लेकिन यह तभी संभव है जब लोग इस बोली को समानता की दृष्टि से देखेंगे इसके व्युत्पति का इतिहास जानेंगे तथा इसमें लिखने के लिये सभी भाषायी एवं व्याकरणिक बंधनों से अपने को मुक्त कर सिर्फ़ बोली की विशेषताओं पर ध्यान देंगे । यह बात ज़रूर है किसी इस बोली में व्याकरण की कोई उचित व्यवस्था नहीं है परंतु यह स्वाभाविक है । बोलियाँ हमेशा किसी सीमित क्षेत्र में बोली जाती है अर्थात् इसकी तुलना हम भाषा से नहीं कर सकते ।

४. अंडमानी हिन्दी (हिंदुस्तानी) की दिशा

अंडमानी हिन्दी (हिंदुस्तानी) प्रयोग की दृष्टि से बहुत ही समृद्ध है,इसमें प्रचुर मात्रा में शब्द भंडार है जो, लिखे जाने पर एक अद्भुत साहित्य का निर्माण कर सकती है। इसमें लिखे जाने पर एक नये इतिहास के जन्म होने की संभावना है जहां गद्य एवं पद्य लेखन की कला में एक नयी शैली का विकास होगा। क्योंकि अंडमानी हिन्दी में वह गुण अंतर्निहित है जो रचनाकार को एक उद्देश्य प्रदान करेगा जिससे वह और भी नए नए विषयों

का समावेश कर एक अच्छी रचना तैयार करने की ओर अग्रसर होगा। अंडमानी हिन्दी को अगर उचित दिशा दी जाये तो इस बोली का भविष्य उज्ज्वल है। 166 वर्ष तक जिसमें कोई भी लेख नहीं लिखी गई वह आज इस उद्देश्यों की पूर्ति कर हिन्दी साहित्य जगत में अपना सिक्का जमाने में
सफल होगा। अंडमानी हिन्दी को निम्नलिखित रूप से दिशा दी जा सकती है :

1)अंडमान निकोबार प्रशासन द्वारा इसकी पुस्तकें मुद्रित कर एक विषय के तौर पर पढ़ाई जाए :

अंडमानी हिन्दी वह बोली है जो आजतक जनता सिर्फ़ सुनकर सीखते आयी है, अर्थात् इसकी कोई लिखित किताब उपलब्ध नहीं है जो इस भाषा को सीखने के विभिन्न आयाम प्रदान करे। अतः एक बच्चा जब जन्म लेता है तब वह अनौपचारिक ढंग से इस बोली को अपने परिवार जनों से सुनकर व वार्तालाप कर सीखता है।इस बोली को अंडमान के बाहर लोग नहीं जानते और शायद ही इस बोली के विषय में कभी सुना हो। यह सोचने वाली बात है कि इतने बड़े द्वीप समूह में जहां इतनी ज़्यादा आबादी रहती है और जो हिन्दी न बोलकर अंडमानी हिन्दी बोलती है वहाँ की प्रांतीय बोली से देश अनभिज्ञ है। फलस्वरूप द्वीप प्रशासन द्वारा कुछ बुजुर्ग (जिन्होंने इस बोली के विकास को अपनी आँखों से देखा हो) तथा विषय विशेषज्ञ द्वारा मिलकर इस बोली पर लिखित एवं आधारित पुस्तकों का निर्माण कर इसे द्वीप समूह के स्कूलों में पठन-पठान का विषय बनानी चाहिए। एन.सी.इफ़ 2005 के अनुसार मातृ भाषा/क्षेत्रीय भाषा ,हिन्दी एवं अंग्रेज़ी पर विशेष बल दिया गया है , इस बोली को क्षेत्रीय बोली के तौर पर पढ़ाये जाने से इक्कीसवी सदी तथा आने वाले अन्य पाठक भी इस बोली से परिचित होंगे और इस बोली को औपचारिक ढंग से सीखेंगे।

2)रोज़गार के क्षेत्र में प्रयोग :

आज अंडमान में जहां भी चले जाओ ,चाहे वह सरकारी दफ़्तर हो या कोई निजी स्कूल,प्रत्येक स्थान में अंडमानी हिन्दी का ही बोलबाला है। यह बोली सबकी ज़ुबान में रहती है इसी कारण यह जनता के मध्य एक लोकप्रिय बोली चुकी है। इस बोली से अंडमानी रोज़ी कर निर्वसन कर सकते हैं। इस बोली को उन सभी स्थानों में प्रयोग में लायी जा सकती है जहां अन्य भाषा दम तोड़ देती है। इसे विज्ञापन की भाषा बनाकर अच्छा मुनाफ़ा कमाया जा सकता है अर्थात् यह रोज़गार के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हो सकती है। इस बोली का अन्य भाषाओं में अनूदित कर रोज़गार को और भी प्रभावी एवं सफल बनाया जा सकता है, केवल ज़रूरत है इस विषय पर काम करना। यह तभी संभव होगा जब लोग स्वयं यह बात समझेंगे कि यह बोली रोज़गार को बढ़ाने के साथ साथ रोज़गार भी प्रदान कर सकती है। हीनभावना को त्यागकर इस बोली को प्रत्येक सरकारी एवं ग़ैर सरकारी संस्थानों एवं कार्यालयों में इसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालनी चाहिये जिससे यह बोली फले-फुलेगी और रोज़गार के क्षेत्र में एक नया वर्चस्व स्थापित करेगी।

3)अंडमानी हिन्दी (हिंदुस्तानी) की शब्दकोश का निर्माण :

आज दुनिया में भाँति भाँति के शब्दकोश उपलब्ध है उदाहरणतः शिक्षा(Education) शब्दकोश , मेडिकल शब्दकोश, भाषा शब्दकोश,गणित शब्दकोश,अर्थशास्त्र शब्दकोश इत्यादि। इन शब्दकोशों का प्रमुख कार्य है उक्त विषय संबंधी शब्दों का विशिष्ट ज्ञान प्रदान करना। अतः अंडमानी हिन्दी(हिंदुस्तानी) एक ऐसी बोली है

जो कभी लिखी नहीं गई अर्थात् यह बोली सिर्फ़ अंडमानी ही बोलते है और इसके विषय में जानते है, अंडमान के बाहर इसकी पहचान शून्य है। अंडमानी हिन्दी की शब्दकोश के निर्माण से इस बोली को लोग जानेंगे साथ ही सीख कर इसके शब्दों की पहचान कर पायेंगे । आज अगर किसी दिल्ली वासी से यह पूछा जाये कि **"आगी"** किसे कहते है तो वह इसकी जानकारी देने में असमर्थ होगा हालाँकि अंडमानी हिन्दी में **"आगी"** का अर्थ **"आग"** से है जो कि सिर्फ़ अंडमानी ही जानता है ।शब्दकोश के निर्माण से अंडमानी हिन्दी को पूरे भारतवर्ष में पहचान मिलेगी और लोग इसके विषय में गहनता से जान पायेंगे । अंडमानी हिन्दी की शब्दकोश में उन सभी शब्दों का समावेश करना चाहिये जिसके विषय में लोग नहीं जानते अतः जब पर्यटक अंडमान भ्रमण के लिए आये तो वे आम बोलचाल से भलीभाँति परिचित हो और उत्तर प्रत्युत्तर का सिलसिला बरकरार रहे । वे अंडमानी हिन्दी के शब्दों से अगर पहले ही परिचित होंगे तो उन्हें अंडमानी जनता से संपर्क साधने के लिए किसी भी कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ेगा और वे एक सुखद स्मृति लिए घर वापस जाएँगे । अंडमानी हिन्दी की शब्दकोश का निर्माण कर हम इस बोली को एक नयी दिशा दे सकते हैं ।

4)हिन्दी तथा हिन्दी की अन्य बोलियों के साथ तुलनात्मक अध्ययन(comparative study) :

अंडमानी हिन्दी स्वतंत्रता,प्रेम,एकता और भाईचारे की बोली है ,यह अपने में अनंत गुणों को समाहित किये हुई है ।इस बोली को अंडमान में ख्याति प्राप्त है फलस्वरूप इसकी हिन्दी की अन्य बोलियों से तुलनात्मक अध्ययन कर इसके गुणों तथा दोषों को वक्ता (बोलने वाला) के सम्मुख लाया जा सकता है जिससे लोग इस बोली की व्याकरणिक पक्ष,बोलचाल की शैली , शब्द भंडार,व्युत्पति, गुण-दोष से परिचित होंगे ।जब भी किसी भाषा या बोली की तुलनात्मक अध्ययन की जाती है तब उस भाषा या बोली में मौजूद समानता या विविधता को पाठक एवं वक्ता के सम्मुख लाया जाता है अतः अंडमानी हिन्दी की तुलनात्मक अध्ययन से इसमें मौजूद अन्य भाषाओं के साथ समानता देखी जा सकता है तथा भविष्य में इसके प्रयोग के विविध आयामों पर चर्चा की जा सकती है ।

तालिका 4.1 : हिन्दी,भोजपुरी तथा अंडमानी हिन्दी के शब्द

हिन्दी	भोजपुरी(हिन्दी की बोली)	अंडमानी हिन्दी (हिन्दी की बोली)
बोली जाती है : पूरे भारत में	बोली जाती है : बिहार एवं उत्तर प्रदेश	बोली जाती है : अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह
बरामदा	अगवाड़ा	बरेंडा
रविवार	अतवार	इतवार

5)साहित्य में स्थान :

अण्डमानी हिन्दी में लिखे जाने पर इसमें प्रचुर मात्रा में गद्य एवं पद्य की रचना की जा सकती है , हालाँकि यह बहुत ही दुख की बात है की आज 166 साल बाद भी इसमें लिखे कोई लेख उपलब्ध नहीं है कारण इसमें

कुछ लिखी ही नहीं गई। अंडमानी बड़े ही चाव से अंडमानी हिन्दी में बोल तो लेते है पर जब लिखने की बारी आती है तब इस बोली को अशुद्ध बताकर हिन्दी में ही लिखी जाती है। इसी के चलते आज हमें कोई भी लेख प्राप्त नहीं है जो अंडमानी हिन्दी में लिखी गई हो। अंडमानी हिन्दी में अगर गद्य एवं पद्य का निर्माण किया जाये तो इस बात की संभावना है कि पाठक इसे बड़े चाव से पढ़ेंगे क्योंकि यह बोली जनमानस की बोली है, यह बोली अंडमानियों को स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा सौग़ात के रूप में प्राप्त हुई है ।चूँकि अंडमानी हिन्दी में अबतक कोई भी लेख उपलब्ध नहीं है अर्थात् इसमें लिखे जाने पर लिखित लेख पाठकों द्वारा पसंद की जाएगी क्योंकि इस बोली से अंडमानी जुड़ाओ महसूस करते है ।अगर इस बोली को लिखी गई तो स्वाभाविक है कि इसे देवनागरी लिपि में लिखी जाएगी क्योंकि इस बोली की निकटता हिन्दी से है और इसी निकटता के कारण इसे हिन्दी की लिपि देवनागरी में लिखी जा सकती है।

6)अंडमानी बोली की मौलिकता को बनाये रखने के लिए प्रयोजन :

अंडमानी हिन्दी अपने में अनेकोनेक गुण समाहित किए हुए है। इसकी शैली, बोली की विविधता,व्याकरणिक पक्ष एवं शब्द भंडार अपने में ही एक पूरक है जो सभी व्यावहारिक पक्षों से परिपूर्ण है । इस बोली की मौलिकता को बनाये रखने के लिए भरसक प्रयास करनी चाहिये। छोटे-छोटे व्यक्तिगत स्तरों में किए गए प्रयासों से इस बोली को लुप्त होने से बचाया जा सकता है । हालाँकि यह बोली आज 166 साल बाद भी अंडमानियों के मध्य एक प्रचलित बोली बनकर व्यवस्थित है तो यह कहने पर कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी की यह बोली अमर एवं अनंत है इसका अंत कभी नहीं होगा। लोग इसे व्यवहार में लाते रहेंगे और यह बोली फलती-फूलती रहेगी ।इस बोली के संरक्षण हेतु भारत सरकार द्वारा उचित कदम उठाये जाने चाहिये, पहले तो इसे लिखने का माध्यम बनाना चाहिए क्योंकि अब हमारे पास लिखने के लिये साधन मौजूद है ,एक समय था जब गुरु अपने शिष्यों को उपदेश देते थें और अनेकोनेक पद्य गाकर सुनाते थे ,शिष्यों को यह पद एवं उपदेशों को याद रखना होता था ,जो श्रुति परंपरा के अन्तर्गत बाद में जनमानस द्वारा सुनाई जाती थी और वही लोग लिख कर उसे एक लिखित रूप प्रदान करते थे ताकि वह भविष्य में लोगों तक पहुँच सके क्योंकि एक समय के बाद मनुष्य की मृत्यु हो जाती है और उनके साथ साथ उनके द्वारा कहे गये उपदेश, पद्य एवं कथा-कहानी आदि का भी अंत हो जाता है। अंडमानी हिन्दी के साथ भी ऐसा न हो इस कारण इसे लिखकर कर संयोजित करनी चाहिए ताकि इस बोली की मौलिकता से पूरा भारत वर्ष परिचित हो और इसे विलुप्त होने से बचाया जा सके।

7)अंडमानी हिन्दी की व्याकरण का निर्माण :

प्रत्येक भाषा की अपनी व्याकरण होती है तथा व्याकरण के माध्यम से ही उक्त भाषा की शुद्ध भाषायिक गुणों को समझा जाता है। हिन्दी ,बांग्ला एवं तमिल आदि भाषा की अपनी अपनी व्याकरण है ठीक उसी प्रकार हिन्दी की बोलियाँ जैसे कि भोजपुरी,मगही एवं मैथिली की भी अपनी व्याकरण है। जब किसी भाषा या बोली की अपनी व्याकरण होती है तो पाठक उस भाषा या बोली को सटीक रूप से सीख पाते है। अंडमानी हिन्दी(हिंदुस्तानी) की अपनी कोई व्याकरण नहीं है अर्थात् व्याकरण के न होने के कारण इस बोली को कभी

लिखी ही नहीं गई । इस बोली के व्याकरण के निर्माण से पाठकों के मध्य इस बोली को सीखने की इच्छा जागृत होगी ।

५. निष्कर्ष

अंडमानी हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है। इस बोली ने अंग्रेजों के ख़िलाफ़ स्वतंत्रता की लड़ायी लड़ी है। इस बोली ने लोगों को आज़ादी के लिए खून बहाते देखा है । ये वही बोली है जिसे बोलकर देश के विभिन्न प्रांतों से आए लोग एकता एवं भाईचारे का भाव प्रदर्शित करते थें।यही नहीं कालापानी की सज़ा सुनाकर लाये क़ैदी इसी बोली में आज़ादी का यशोगान करते थे । अतः इस बोली को पूरे भारत वर्ष से परिचित कराना प्रत्येक अंडमानी का कर्तव्य है ।

•**हीन भावना को ख़त्म करे की इसमें अशुद्धियाँ है :** भाषा और बोली दो अलग पहलू है अतः भाषा पूरे देश या राज्य में बोली जाती है जबकि बोली किसी सीमित क्षेत्र में बोली जाती है इसी कारण इसमें विविधता देखी जा सकती है , जो कि स्वाभाविक है ,अतः अंडमानी इस बात को हमेशा ध्यान रखें कि इसमें अशुद्धियाँ नहीं वरन् विविधताएँ हैं, हम बोली की तुलना भाषा से नहीं कर सकते क्योंकि दोनों की अपनी अपनी विशेषता होती है । यह ज़रूरी नहीं है कि व्याकरण का प्रयोग जिसप्रकार हम भाषा के पक्ष में करते है उसी प्रकार बोली में भी करे। इसलिए हीनभावना को ख़त्म कर बिना किसी पक्षपात के इस बोली को खुलकर अपनाये ।

• **इसे बचाये रखने के लिए खुलकर प्रयोग करें :** बिना किसी रोकटोक के इसे खुलकर व्यवहार में लाये ।अपनी मिथ्याभिमान को दर्शाने के लिये अंडमानी जनता किसी हिन्दी के जानकार के सम्मुक हिन्दी तो बोल लेते है परंतु चंद मिनटों के बाद वे अंडमानी हिन्दी ही बोलते है, कभी कभी अंडमानी जनता मजबूरन हिन्दी बोलते है, पर कुछ समय के बाद वे अंडमानी हिन्दी बोलकर चैन की साँस लेते है। निष्कर्षतः यह कह सकते है कि अंडमानी हिन्दी अपनी भाषायिक गुणों से परिपूर्ण है तथा इसे खुलकर प्रयोग करनी चाहिये ।

• **अंडमानी हिन्दी में साहित्य का निर्माण करें :** अंडमानी हिन्दी हम सभी की धरोहर है अर्थात् इसमें साहित्य का निर्माण कर हमें इसकी महत्व को समझना चाहिए। जब इस बोली में साहित्य का निर्माण होगा तभी लोग इस बोली से परिचित होंगे और इसके महत्ता को जानेंगे ।गद्य एवं पद्य के विभिन्न विधाओं में रचना का निर्माण कर हम अंडमानी बोली को पूरे भारत वर्ष में पहचान दिला सकते हैं। यह बोली हिन्दी की अन्य बोलियों से अधिक सरल है । व्यक्ति एक बार सुनते ही समझ जाता है कि क्या कही जा रही है अतः यह संभावना है कि इसमें साहित्य की कृतियों का निर्माण होने पर पूरा भारत वर्ष बड़े ही चाव से पढ़ेगा और इस बोली के महत्व को समझेगा ।

•**बोली को कमतर न आंके :** इस बोली ने आज़ादी के लिए लंबी लढ़ाई लड़ी है, स्वतंत्रता सेनानी यही बोली बोलते हंसी हँसी फाँसी के फंदों पे चड़ गए तो फिर यह बोली किसी से कम कैसे हुई? यह बोली उन शूरवीरों की है जो मरने से डरते नहीं थे वरन् अंतिम समय तक सेल्यूलर जेल की बेड़ियों से अंग्रेजों से लोहा लेते रहें।

इस बोली को कमतर न आंके बजाये इसकी विविधता,भाषा शैली एवं व्याकरणिक पक्ष की सराहना करे कि किस प्रकार देश के अलग अलग कोनों से लाये जाने पर भी क़ैदियों ने एक नयी बोली का इजात किया। जहां तक व्याकरणिक त्रुटियों की बात है तो हमें समझना होगा कि हिन्दी की व्याकरण को हम अंडमानी हिन्दी (हिंदुस्तानी) पर नहीं लाद सकते, हिन्दी एक भाषा है जिसकी अपनी व्याकरण है, उसी प्रकार तमिल एवं बांग्ला की भी अपनी अपनी व्याकरण है, पर अंडमानी हिन्दी की अपनी व्याकरण नहीं है इसलिए इसे हिन्दी के व्याकरण के साथ तोला जाता है और अशुद्धियाँ निकाली जाती है जो कि भाषायिक दृष्टि से निराधार है।

- **शिक्षकों की ज़िम्मेदारी :** NCF -2005 का कहना है की मातृभाषा एवं क्षेत्रीय भाषाओं में अगर बच्चों को पढ़ाई जाए या अधिगम एवं शिक्षण का माध्यम बनायी जाए तो बच्चे अन्य भाषाओं के मुक़ाबले अधिक सीखते है। बच्चे जिस भाषा में घर में बातचीत करते है और आस-पास के समाज में बोलते है अगर उसी भाषा का प्रयोग कक्षा में की जाये तो वह बच्चों के लिए लाभप्रद होता है।अर्थात् यहाँ शिक्षकों की अहम ज़िम्मेदारी होती है कि वे क्षेत्रीय बोली जो अंडमान निकोबार द्वीप समूह की अंडमानी हिन्दी(हिंदुस्तानी) है को अधिगम एवं शिक्षण का माध्यम बनाये तो बच्चे अंडमानी हिन्दी के विषय में और जानेंगे और इस बोली का प्रयोग कर शैक्षिक गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करेंगे।
- **हिन्दी साहित्य कला परिषद की भागीदारी :** अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह स्थित हिन्दी साहित्य कला परिषद जो की द्वीपों में हिन्दी भाषा को विकास की ओर अग्रसर करने में अपनी भागीदारी निभा रहा है कि ज़िम्मेदारी बनती है की वह अंडमानी हिन्दी (हिंदुस्तानी) पर व्याख्यान,संगोष्ठी एवं कार्यशाला का आयोजन कर इस बोली को समस्त द्वीप वासियों से अवगत करायें, उन्हें इसकी महत्ता के बारे में समझाये और इस बोली में लिखने के लिए प्रेरित करें।
- **राजभाषा विभाग एवं शिक्षा विभाग इस पर विचार करें :** द्वीपों में स्थित राजभाषा विभाग इस बोली की महत्व को जनता तक पहुँचाये तथा राज्य शिक्षा विभाग के साथ मिलकर स्कूली पाठ्यक्रम में इस बोली पर आधारित पुस्तकों के निर्माण में अपनी भागीदारी का निर्वहन करें। राजभाषा विभाग तथा शिक्षा विभाग इस बोली के प्रचार प्रसार में लोगों की नियुक्ति करें तथा उनके साथ मिलकर किताबें,शोध,शब्दकोश एवं अन्य स्कूली पाठ्यक्रमों का निर्माण करें।
- **विभिन्न शिक्षण एवं ग़ैर शिक्षण संस्थानों के हिन्दी कोश (Hindi cell) की ज़िम्मेदारी :** प्रत्येक सरकारी ,ग़ैर सरकारी कार्यालयों एवं संस्थानों में हिन्दी कोश की स्थापना की जाती है जिनका प्रमुख कार्य होता है हिन्दी को बढ़ावा देना इसकी उपयोगिता को कर्मचारियों के सम्मुख रख हिन्दी में सरकारी कामकाजों को करने के लिए प्रेरित करना है।अंडमानी हिन्दी (हिंदुस्तानी) के प्रचार -प्रसार में इनका योगदान सरहाया जा सकता है अतः इनकी ज़िम्मेदारी बनती है कि वे इस बोली को पूरे देश में लेख एवं फ़ीचर लेखन के माध्यम से जनता तक पहुँचायें।

संदर्भ सूची

1. तिवारी, रामकृपाल 'अंडमान निकोबार की जनजातीय बोलियों का भाषिक अध्ययन'

2. रथ, रबीन्द्रनाथ तथा डॉ निरुपमा रथ 'रिक्रिएटिंग हिस्ट्री ऑफ़ अंडमान एंड निकोबार आइलैंड्स'
3. राष्ट्रीय पाठ्यचार्य रूपरेखा 2005 - शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
4. शर्मा, ब्रह्मस्वरूप 'आँखों देखा अंडमान'
5. सरकार, प्रोनोब कुमार 'हिस्ट्री ऑफ़ अंडमान एंड निकोबार आइलैंड्स: अनसंग हीरोज़ एंड अनटोल्ड स्टोरीज़'